'विविधता में भारतीयता का स्पंदन'

साहित्य अकादेमी और राष्ट्रपति भवन सांस्कृतिक केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में 'कितना बदल चुका है साहित्य' विषयक दो दिवसीय साहित्यिक सम्मिलन का आयोजन किया गया 29-30 मई को हुए इस आयोजन का उद्घाटन 29 मई को राष्ट्रपति महामहिम द्रौपदी मुर्मु ने राष्ट्रपति भवन सांस्कृतिक केंद्र, नई दिल्ली में किया। उन्होंने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि 140 करोड़ देशवसियों के हमारे परिवार में अनेक भाषाएँ और अनगिनत बोलियां है तथा साहित्यिक परंपराओं की असीम विविधता है। लेकिन इस विविधता में भारतीयता का स्पंदन महसूस होता है। भारतीयता का यही भाव हमारे देश की सामूहिक चेतना में रचा-बसा है।

उद्घाटन सत्र के बाद 'सीधा दिल से: कवि सम्मिलन' का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता उर्दू के प्रख्यात शायर शीन काफ निजाम ने की। दूसरे दिन 'भारत की स्त्रीवादी साहित्यः नए आधार की तलाश में', 'साहित्य में परिवर्तन बनाम परिवर्तन का साहित्य' एवं 'वैश्विक परिप्रेश्य में भारतीय साहित्य की नई दिशाएँ' विषयक तीन सत्रों में साहित्य के बदले स्वरूपों पर प्रतिष्ठित भारतीय लेखकों एवं विद्वानों द्वारा विचार-विमर्श किया गया। अंत में देवी अहिल्याबाई होलकर की 300वीं जयंती के अवसर पर हिमांशु बाजपेयी तथा प्रज्ञा शर्मा द्वारा अहिल्याबाई गाथा की प्रस्तुति की गई।